



Exotic

LOVELY & LAVISH VOL : 03



Exotic 301



Exotic 302



Exotic 303



Exotic 304



Exotic 305



Exotic 306

S4UTM
by
SHIVALI

Exotic

LOVELY & LAVISH VOL: 03

S4UTM
SHIVALI



Exotic 302

S4UTM
by
SHIVALI



Exotic 305



Exotic 301



Exotic 302



Exotic 303



Exotic 304



Exotic 305



Exotic 306

S4UTM
by
SHIVALI

Exotic
LOVELY & LAVISH VOL: 03

S4U
by
SHIVALI



Exotic 301



Exotic

LOVELY & LAVISH VOL : 03

S4U
SHIVALI



Exotic 306

संन्यः "कुविभारदय क
। वार्तो चतुर्विधा तत्र य
ब्रजराजं प्रति श्रीकृष्णवचने तथेवा-
गो-विण्णेशि श्रीभाककन-गोपवासवर्गिने

S4UTM
By
SHIVALI



Exotic 305

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

S4UTM
by
SHIVALI



Exotic 303

S4UTM
by
SHIVALI



श्रीशुककृत-गोपवात्सव्याने
नचर(१)तायामपि चिदुत्सव जीवे"दिव्यारभ्यः
अमहारश्रवणोप्यधिकं वशि-तुर्ग्युच्यते । वलि-तदुक्ति-वर्ग-पाव-
षे गोरक्षय वाणिज्यं कुसीदं निश"मिति-वसव-
मुन्विधा तत्र वयं गोवृत्तयो-
नन्विद्यते

Exotic 304

S4U
SHTVALLI



Exotic 306

संन्यः कृषिभारदक्षक
। यार्ता चतुर्विधा तत्र प
ब्रजराजं प्रति श्रीकृष्णदत्तने तथेवा
गो-विणोति श्रीभाऊजन-गोपवासवर्षानं

S4U
by
SHIVALI



Exotic 301



Exotic

LOVELY & LAVISH VOL : 03

S4UTM
by
SHIVALI



Exotic 304

श्रीगुरुकृत गोपवातपरिणे
वचर(लायामणि विदुस्व ज्ञेवे"दिव्यारभ्यः
आवहारश्रवणोपपिने कवि-तुर्गमुच्यते । वासि-तुर्गिणः
ये गोरक्षप वाणिज्यं कुसीदं मिश्रा"मिति कुर्वन्तः
गुर्विवा तत्र त्रयं गोवृत्तयो-

S4UTM
SHIVALI



Exotic 302



Exotic

LOVELY & LAVISH VOL : 03